सैलाना के महाराजा विक्रम सिंह तथा शेफ दीवान अपने सामने फैले हुए सैलाना के साथ।

कोलकाता का गौरव

सैलाना का खाना-खजाना

सुचन्द्रा मुखर्जी

कोलकाता, 18 अगस्त। सैलाना मात्र एक स्थान या राज परिवार का नाम ही नहीं है। बल्कि सैलाना का आशय है पाक विज्ञान की खोज एवं खाद्य कला का मिलन स्थान। पीढ़ियों से सैलाना के राजसी परिवार ने अचूक समर्पण के साथ विज्ञान तथा कला दोनों को अपनाया है।

यह सैलाना के के.सी.आई.ई. महाराजा दिलीप सिंह से शुरू हुआ जिनके अन्दर विगत युग के संग्रहीत ब्यंजनों एवं खाद्य के लिए उत्कट अभिलाषा थी।

उन्होंने भावी पीढ़ियों के लिए उन्हे संरक्षित रखने के लिए संस्कृत, उर्दू तथा फारसी में लिखित प्राचीन ब्यंजनों की पुस्तकों का अनुवाद करने को अपना लक्ष्य बनाया। 1905 की बात है।

उनके हुनर से प्रभावित होकर तत्कालीन हैदराबाद के निजाम ने उन्हें एक ब्यंजन दिया जो हैदराबाद के राजसी रसोई का भलीभांति संरक्षित रहस्य था।

अपने पिता सैलाना के स्वर्गीय महाराजा दिग्विजय सिंह जी के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए उन्होंने उसे पूर्ण रूप से विभिन्न स्वाद तथा सैलाना का प्रतीक बनाने के लिए प्रत्येक ब्यंजन के साथ निरन्तर शोध एवं प्रयोग किया। इसका ज्वलंत उदाहरण मशहूर सैलाना दाल है।

खाने का कोई भी शौकीन व्यक्ति पलक झपकते ही प्लेट साफ कर सकता है। उन दिनों राजसी किचेन की प्रयोगशाला में उसको रखना जरूरी होता था।

- शेष पेज 12 पर